HIN1B08a – Fiche d'exercices N° 6 – Transcription

Exercice 1

- नमस्कार। दो प्रस्ताव हैं। एक हम सब मिलकर विरोध कर रहे हैं। आप दस्तख़त करेंगी ?
- अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ विरोध कर रहे हैं अंग्रेज़ी में।
- बँगला में विरोध करने से अंग्रेज़ समझेंगे नहीं। पढ़कर कीजिए न।
- ग़रीब विधवा को ठगके कोई भला क्या कर लेगा बिहारी बाबू ? आप और किसी के पास नहीं गए ?
- वह क्यों ?
- महिलाओं के दस्तख़त नहीं दीख रहे हैं।
- गए थे न। बहुतों को दस्तख़त करना नहीं आता। जिन्हें आता है उन्होंने डर से नहीं किया।
- डर ? अंग्रेज़ों से ?
- नहीं ख़राब लिखावट के कारण। और दूसरा प्रस्ताव महेंद्रा का। महेंद्रा ने आप से कहने को कहा है अगले शनिवार Baganbari में हम सब को पिकनिक पर जाना है।
- मैं नहीं जाऊँगी।

Exercice 2

- पर मैं तुम्हें बदल सकता हूँ। मैं तुम्हें ड्रैगन योद्धा में बदल सकता हूँ और मैं बदलूँगा।
- छोड़ो भी। टाई लंग यहाँ इस तरफ़ आ रहा है। और भले ही उसे यहाँ पहुँचने में सौ साल लग जाएँ पर आप बताइए आप इसे कैसे बदलेंगे एक ड्रैगन योद्धा में ? हाँ ? कैसे ? कैसे? कैसे ?
- मुझे नहीं पता।

Exercice 3

- उसने जानबूझकर हाथी नहीं रखे। इस इरादे से कि उसकी रफ़्तार में कमी न हो जाए।
- उनके पास अनाज का काफ़ी ज़ख़ीरा है। यहाँ रोकर रखने पर भी असर नहीं पड़ेगा। वह ज़्यादा वक़्त तक हमारा मुक़ाबला कर सकते हैं जहांपनाह।
- शरीफ़ुद्दीन के बहकाने पर हमारी फ़ौज के जो सिपाही उसके हमनवा बन गए हैं उन्हें किसी भी क़ीमत पर वापस लाना है। जंग की सबसे अज़ीम ख़ूबी बिना शमशीर आज़माए दुश्मन की दीवार गिरा देने में है।

Exercice 4

- वकील साहब जिस दिन मर्डर हुआ था आप भी हवेली गए थे न ?
- हाँ लेकिन मैं तो सुबह गया था। सोन्या मडम अपनी वसीयत बदलवाना चाहती थी इसलिए ..
- करेक्ट। जहाँ दौलत होती है वहाँ वसीयत होती। और जहाँ वसीयत होती है वहाँ बनानेवाले की मौत होती है।

Exercice 5

- माम। प्लेन में जो हुआ .. आइम सोरी.. मैं मदद करना चाहती थी लेकिन .. वह .. आइम सोरी
- श। ग़लती तुम्हारी नहीं है। मुझे अचानक तुम्हें इतना कुछ करने को नहीं कहना चाहिए था। पर हालात अब बदल गए हैं और हिचकिचाहट की गुंजाइश हमारे पास नहीं है विनी। तुम्हारा पावर तुम्हारे सोच से कहीं ज़्यादा है। सोचना मत और घबड़ाना मत। वक़्त आने पर तुम समझ जाओगी तुम्हें क्या करना है। यह तुम्हारे ख़ून में है।

Exercice 6

कम्पनी के बहुत सारे धंधों में से सबसे बड़ा धंधा था अफ़ीम। कम्पनी ज़बरदस्ती हिन्दुस्तानी किसानों से अफ़ीम उगवाती थी, कौड़ियों के दाम खरीदती थी, और ऊँचे दामों पर चीन के बाज़ारों में बेज देती थी। चीन के समराट् ने इसका विरोध किया। तो कम्पनी ने चीन के ख़िलाफ़ जंग छेड़ दी। लड़ने और मरने के लिए हिन्दुस्तानी सिपाही तो थे ही और कम्पनी इसे कहती थी व्यापार।

Exercice 7

- आप नहीं गए तालाब किनारे फूल तोड़ना देखने।
- बिहारी की बचकानी हरकतें देखते देखते मैं ऊब चुका हूँ। हमेशा बहादुरी जताता रहता है।
- उनका कोई दोष नहीं है। बाली ज़िद कर रही थी इसलिए मैंने ही कहा तोड़ लाने के लिए।
- यह लीजिए आपका काँटा। इलाज अधूरा नहीं छोड़ा मैंने। यह उसका सबूत।
- शुक्रिया।
- ओ बाली देख बिहारी देवरजी ने मुझे कितने सारे फूल तोड़के दिए।

Exercice 8

- जैसा कि गीता में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं "*वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरो पराणि । तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही* ॥" अर्थात् : जिस प्रकार आदमी पुराने कपड़ों को छोड़कर नाए कपड़े धारण कर लेता है, उसी प्रकार आत्मा जर्जर शरीर को छोड़कर नया शरीर धारण कर लेती है। इसलिए बच्चा, तुझे समझना चाहिए कि तेरी घरवाली भले शरीर से मर भी गई हो, उसकी आत्मा जीवित है।
- आप धन्य महाराज। बड़ी शाँति मिली इस विचार से।

Exercice 9

जिस दिन से आप गए हैं भया माँ ने आपको सिर्फ़ इनकी आँखों से देखा है। इन्होंने एक माँ को अपने बेटे से दूर रहने की शक्ति दी है। आपको इनकी कसम है भया, सिर्फ़ एक बार आप घर आएँगे, सिर्फ़ एक बार भया। चाहे वह एक पल के लिए क्यों न हो, चाहे वह एक दिन के लिए क्यों न हो लेकिन एक बार भाभी को महसूस तो करने दीजिए कि वह हमारे परिवार की बहू है, उस घर की बहू है।

Exercice 10

- कमज़ोर दिल अच्छा खाना नहीं बना सकते। आप में कल्पना होनी चाहिए और मज़बूत दिल। ट्राइ तो कीजिए भले ही बात न बने। और हाँ आप क्या हैं इस बात को अपनी सीमा कभी मत बनने दीजिए। आपकी सीमा आप ख़ुद हैं। मैं हमेशा कहता हूँ खाना कोई भी पका सकता है।